राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी एवं पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न लाल बहादुर शास्त्री जी को विश्वविद्यालय परिवार की ओर से सादर नमन एवं भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का जीवन सम्पूर्ण मानवता के लिए **सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, सद्भाव, नैतिकता और निःस्वार्थ सेवा का शाश्वत संदेश** है। पूज्य बापू ने अपने जीवन और कर्मों से यह सिद्ध किया कि **स्वच्छता** केवल हमारे बाहरी परिवेश तक सीमित नहीं, बल्कि **हमारे विचारों, आचरण और सामाजिक चेतना का भी अभिन्न अंग** है।

महात्मा गांधी जी ने **स्वदेशी और स्वावलंबन** को राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण आधार माना। उनका दृढ़ विश्वास था कि राष्ट्र की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब हम अपने **देश में निर्मित वस्तुओं** को अपनाएँ, **स्थानीय कारीगरों, श्रमिकों और उद्यमियों** को प्रोत्साहित करें तथा **आत्मनिर्भरता की भावना** को **जन-जन** तक पहुँचाएँ। उनके लिए स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह **आत्मसम्मान, आर्थिक स्वतंत्रता, श्रम की गरिमा और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना** का प्रतीक था। **चरखा और खादी के** माध्यम से उन्होंने **स्वदेशी उत्पादन**, **ग्रामीण अर्थव्यवस्था** और स्वावलंबन को सशक्त बनाने का संदेश दिया। बापू का यह विचार आज भी आत्मनिर्भर, सशक्त और **समृद्ध भारत** के निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका चिंतन समाज के **अंतिम व्यक्ति** के **कल्याण, सम्मान और गरिमा** पर केंद्रित था। वे **महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय** के प्रबल समर्थक थे तथा **अस्पृश्यता, अशिक्षा, अस्वच्छता और सामाजिक कुरीतियों** के उन्मूलन को राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक मानते थे।

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का **सरल, सहज और सादगीपूर्ण जीवन, कर्तव्यपरायणता**, **सत्यनिष्ठा** और **राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण** हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने अपने **आचरण और कर्मों** से यह सिद्ध किया कि महानता पद या प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि **ईमानदारी, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा-भाव** में निहित होती है। देश के कठिन दौर में उनके नेतृत्व ने **राष्ट्रीय एकता**, आत्मनिर्भरता और **जनभागीदारी** की भावना को सुदृढ़ किया। उनका अमर संदेश **"जय जवान, जय किसान"** देश की **सुरक्षा और कृषि-समृद्धि** के महत्व को रेखांकित करता है। **शास्त्री जी का जीवन हमें कर्तव्यनिष्ठ- राष्ट्रसेवा की प्रेरणा देता है।**

हम पूज्य बापू और शास्त्री जी के विचारों एवं आदर्शों को केवल स्मरण तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें अपने कर्मों में उतारते हुए **स्वच्छ, शांतिपूर्ण, समतामूलक, स्वदेशी, आत्मनिर्भर एवं संवेदनशील भारत** के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दें। **सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और सेवा के आदर्शों को जीवन में अपनाना ही इन महान विभूतियों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है।**

पूज्य बापू एवं शास्त्री जी को शत्-शत् नमन।

आचार्य राज कुमार मित्तल
कुलपति
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ